10

''हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ''

बाइबल पाठ #2

I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल (क्रमश:)।
   झ. यीशु के आने की यूसुफ के पास घोषणा (मत्ती 1:18-25)।
   ञ. यीशु का जन्म (लूका 2:1-7)।
   ट. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (लूका 2:8-20)।
   ठ. यीशु का खतना और नामकरण; मंदिर में (लूका 2:21-39)।
   ड. पूर्व से आए ज्योतिषियों (''पण्डितों'') का यीशु के दर्शन के लिए आना (मत्ती 2:1-12)
   ढ. मिस्र में जाना व बैतलहम में बच्चों का मारा जाना (मत्ती 2:13-18)।
   ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया (मत्ती 2:19-23; देखें लूका 2:39ख)।
   त. यीशु का नासरत में रहना; बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम में जाना (लूका 2:40-52)।

परिचय

यशायाह ने आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी इन शब्दों में की: ''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा'' (यशायाह 9:6)।

यहूदी लोग उस समय उन्हें विजय दिलाने में अगुआई करने के लिए एक योद्धा की राह देख रहे थे, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें अपनी ओर वापस लाने के लिए एक असहाय बालक भेज दिया। लोगों की इच्छा सांसारिक सिंहासन पर बैठने वाले एक शासक की थी, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें चरनी में एक बालक दे दिया। यह मनुष्य का नहीं, बल्कि परमेश्वर का ढंग था।

एक बालक की प्रतिज्ञा की गई (मत्ती 1:18-25)

''मसीह आ रहा है!'' पाठ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रारम्भिक जीवन के संक्षिप्त विवरण के साथ समाप्त हुआ। इस पाठ को आरम्भ करते हुए, आइए उस समय में वापस चलते हैं, जहां मरियम इलिशबा के साथ तीन महीने रहकर वापस आई थी। मरियम के नासरत में जाने के समय सब को पता चल गया होगा कि वह गर्भवती है। मैं उस अफवाह की, जो फैलने लगी थी, केवल कल्पना ही कर सकता हूं।

यूसुफ की मुश्किलें (आयतें 18, 19)

यूसुफ तो जैसे बर्बाद ही हो गया होगा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे। मंगेतर पवित्र और कानूनी तौर पर बाध्य होता था, चाहे विवाह का समारोह न हुआ हो और पति-पत्नी के रूप में उनका मेल न हुआ हो। ऐसे समय में यूसुफ के पास तीन विकल्प थे:

(1) वह मरियम की स्थिति को नज़रअन्दाज करके उससे विवाह कर सकता था। स्पष्टतया उसने इस सम्भावना पर विचार नहीं किया होगा। धर्मी होने के कारण (आयत 19) उसे लग रहा होगा कि साफ तौर पर अनैतिक लगने वाली बात को अनदेखा करना गलत होगा।[1]

(2) वह सगाई की प्रतिज्ञाएं न निभाने के कारण मरियम को पत्थरवाह करवा सकता था (व्यवस्थाविवरण 22:23, 24)। यूसुफ ने यह विकल्प भी ठुकरा दिया। क्योंकि वह केवल धर्मी पुरुष ही नहीं, बल्कि दयालु भी था। उसके मन में मरियम के प्रति अभी भी प्रेम होगा।

(3) वह उसे तलाक दे सकता था।[2] व्यवस्था में पुरुष के लिए प्रावधान था कि ''उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर'' उसे ''त्याग पत्र लिखकर'' दे सकता था (व्यवस्थाविवरण 24:1)। यूसुफ ने फैसला किया कि यह विकल्प तीनों बुराइयों में से कम बुरा है। उसने मरियम को जितनी जल्दी हो सके, चुपके[3] से छोड़ देने का मन बनाया था ताकि उसे और बदनामी से बचाया जा सके। अपने फैसले से वह खुद ही निराशा से भर गया होगा।[4]

परमेश्वर का समाधान (आयतें 20-25)

इस पाठ के लिए वचन में बड़ा ज़ोर इस बात पर है कि किस प्रकार परमेश्वर ने प्रबन्ध किया, ताकि बालक के लिए यशायाह द्वारा की गई प्रतिज्ञा पूरी हो सके। कहानी के इस भाग में, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत भेजकर यूसुफ को दुविधा से निकाल दिया। स्वर्गदूत ने इस बढ़ई को बताया:

> ... हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी

> और तू उसका नाम यीशु रखना; ज़्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (आयतें 20, 21)।

यूसुफ को समझ नहीं आ रहा होगा कि वह ज़्या करे: उसे यह जानकर प्रसन्नता भी हुई होगी कि उसकी प्रिय मरियम बेवफ़ा नहीं है, और मसीहा की घोषणा से रोमांचित भी हो गया होगा। परन्तु उसे यह अहसास भी होगा कि अब उसे और मरियम दोनों को ही निर्मोही लोगों के ताने सुनने पड़ेंगे। फिर भी वह घबराया नहीं। वह ''... नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। और जब तक वह पुत्र न जनी[5] तब तक वह उसके पास न गया[6]'' (आयतें 24, 25क)।

मज़ी, जो यह सिद्ध करना चाहता था कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा था, ने परमेश्वर की प्रेरणा से यह अवलोकन शामिल किया:

> यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवज़्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो[7] कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इज़्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है ''परमेश्वर हमारे साथ''[8] (आयतें 22, 23)।

''इज़्मानुएल'' पर जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे की टिप्पणी कि ''प्रकृति परमेश्वर को हमारे ऊपर दिखाती है; व्यवस्था परमेश्वर को हमारे विरुद्ध दिखाती है; परन्तु सुसमाचार परमेश्वर को हमारे साथ, और हमारे लिए दिखाता है।''[9]

एक बालक की घोषणा होती (लूका 2:1-20)

यीशु का जन्म (आयतें 1-7)

एक-दूसरे के प्रति यूसुफ और मरियम के प्रेम के साथ, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में उनके भरोसे ने, उनके रास्ते में आने वाले किसी भी व्यंग्य और अपमान को रुकावट नहीं बनने दिया। मरियम को नौवां महीना लगने पर, उनके अनुमान हर रोज़ बढ़ते जा रहे होंगे। परन्तु एक समस्या थी, जिससे वे अनजान थे कि मसीहा का जन्म बैतलहम में होना था (मीका 5:2), जिस कारण वे नासरत में रहे।

इससे पहले, परमेश्वर ने अपने कार्य के लिए एक स्वर्गदूत का इस्तेमाल किया था। इस परिस्थिति में, उसने रोम के सम्राट तक का इस्तेमाल किया। ''उन दिनों में औगस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं'' (लूका 2:1)।[10] यह नाम लिखाई सज़्भवतया रोम के कर का आधार बढ़ाने के लिए थी।

रोमी साम्राज्य में रहने वाले हर व्यज़्ति के लिए नाम लिखाने अपने पूर्वजों के नगर में जाना आवश्यक था। यूसुफ, जो राजा दाऊद के वंश से था, को दाऊद के जन्म स्थान, बैतलहम में जाना था, जो यरूशलेम के दक्षिण में पांच मील दूर था।[11] कानूनी तौर पर

मरियम के लिए जाना आवश्यक नहीं होगा, परन्तु वह अपने बच्चे के जन्म के समय यूसुफ से दूर नहीं रहना चाहती होगी।[12]

> और यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदियों में दाऊद के नगर बैतलहम को गया कि अपनी मंगेतर[13] मरियम के साथ, जो गर्भवती थी, नाम लिखवाए (आयतें 4, 5)।

नासरत से बैतलहम तक के थका देने वाले सफर से उस दज़्पज़ि की निराशा की कल्पना करना हम पर छोड़ दिया जाता है जब ''उनके लिए सराय में जगह न थी'' (आयत 7)। हमें यह भी नहीं बताया गया कि वे पशुओं के साथ कैसे सो पाए होंगे।[14] केवल बालक के जन्म के बारे में बताया गया है। इतिहास की सबसे यादगारी घटना[15] के लिए शज़्दों का अभाव पाया जाता है:

> उन के वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए। और वह अपना पहिलौठा[16] पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; ज़्योंकि उनके लिए सराय में जगह न थी (आयतें 6, 7)।

चरवाहों की कहानी (आयतें 8-20)

बाहर से आए लोगों के शोर के कारण नवजन्मे बालक के रोने की आवाज़ पर कोई ध्यान न देता, परन्तु परमेश्वर ने इस घटना को गुमनाम नहीं रहने दिया। ईश्वरीय घोषणा नगर के अगुवों या आराधनालय के अधिकारियों को नहीं, बल्कि गडरियों के एक झुंड के पास की गई, ''जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे'' (आयत 8)।

चरवाहों को स्वर्गदूत के दर्शन की कहानी संसार की सबसे प्रसिद्ध घटनाओं में से एक है। स्वर्गदूत की बातें बार-बार दोहराई जाती हैं:

> मत डरो; ज़्योंकि देखो मैं तुज़्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिए होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुज़्हारे लिए एक उद्धारकर्ज़ा जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। और इस का तुज़्हारे लिए यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे (आयतें 10-12)।[17]

उस चरनी को ढूंढ़ने के लिए, जिसमें बालक था। चरवाहों को कितनी चरनियां देखनी पड़ी थीं ? यह हम नहीं जानते, परन्तु मैं उन्हें हर अस्तबल और चारे की जगह में ढूंढ़ते हुए नगर में इधर-उधर भागते देख सकता हूं। बालक के मिल जाने पर, उन्होंने मिलने वाले हर व्यज़्ति को बताया (आयतें 17, 18)। उन्हें ''पहले सुसमाचार प्रचारक'' कहा गया है, जिन्होंने सबसे पहले शुभ समाचार दूसरों तक पहुंचाया था।[18]

एक बालक की स्तुति हुई (लूका 2:21-39)

खतना और नामकरण (आयत 21)

कुछ लोगों का विचार है कि यीशु के जन्म के साथ ही पुराने नियम का युग समाप्त हो गया था, परन्तु बाइबल सिखाती है कि मसीह ''व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ'' (गलातियों 4:4)।[19] वह एक यहूदी माता की कोख से जन्मा यहूदी बालक था, जो जीवन भर यहूदी नियमों की पालना करता रहा। जब मसीह आठ दिन का हुआ, तो व्यवस्था के अनुसार उसका खतना किया गया (लैव्यव्यवस्था 12:3)। उसी समय स्वर्गदूत के निर्देश के अनुसार उसका नाम ''यीशु'' रखा गया था (लूका 1:31; मत्ती 1:21)।

मन्दिर में जाना (आयतें 22-38)

व्यवस्था ने यूसुफ और मरियम को इसके अलावा और भी कई ज़िम्मेदारियां सौंपी थीं। मिस्र में दस विपत्तियों के दौरान इस्राएलियों के पहलौठों को छुड़ाने को याद रखने के लिए पहलौठा पुत्र धन से छुड़ाया जाना आवश्यक था (निर्गमन 13:2, 10-14; 34:19, 20; गिनती 3:40-51; 18:15, 16)। इसके अलावा, पुत्र के जन्म के चालीस दिन बाद माता के लिए शुद्ध होने के समारोह के लिए मन्दिर में जाना आवश्यक था, जिसमें बलिदान भी भेंट करना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 12:2-8)।[20] मन्दिर में यीशु को प्रस्तुत किया जाना और मरियम का शुद्ध होना स्पष्टतया एक ही समय हुए।

मन्दिर में बहुत से लोगों ने यूसुफ और उसके छोटे से परिवार पर ध्यान नहीं दिया होगा, परन्तु दो लोग उन्हें देखकर रोमांचित हुए थे। एक तो परमेश्वर का भय रखने वाला बूढ़ा भक्त शमौन था, जिसे परमेश्वर द्वारा बताया गया था कि जब तक वह मसीहा को देख न ले, मरेगा नहीं। यीशु को देखकर उसके उल्लासपूर्ण शब्दों से इस तथ्य का पता चला कि यीशु यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के लिए भी उद्धार लाएगा (लूका 2:31, 32)। शमौन के शब्दों में मरियम के हृदय को चीरने वाली तलवार की भी बात थी (आयत 35)।

दूसरा, हन्ना नामक चौरासी वर्षीय एक भविष्यवक्तिन थी।[21] जब उसने यीशु को देखा, तो ''वह उस घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी, और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उस बालक के विषय में बातें करने लगी'' (आयत 38)।

बैतलहम में वापस (आयत 39क)

''और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा चुके'' (आयत 39क), तो वे बैतलहम में वापस आ गए (देखें मत्ती 2:8, 9)।[22] स्पष्टतया, यूसुफ और मरियम ने फैसला कर लिया था कि दाऊद की सन्तान के पालन-पोषण के लिए (मत्ती 1:1; लूका 1:32) दाऊद का नगर (लूका 2:4, 11) ही उपयुक्त स्थान है। उन्हें रहने के लिए एक घर मिल गया (मत्ती 2:11), और यूसुफ ने वहीं से बढ़ई का काम करना आरम्भ कर दिया होगा।

बालक की सुरक्षा हुई (मत्ती 2:1-23; लूका 2:39ख)

''ज्योतिषियों'' का आना (मत्ती 2:1-12)[23]

शमौन ने संकेत दिया था कि यीशु केवल यहूदियों का ही नहीं, बल्कि अन्यजातियों का भी मसीहा होगा। इसका प्रमाण शीघ्र ही मिलने लगा, जो पूर्व से आए पण्डितों में था: ''... जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी[24] यरूशलेम में आकर पूछने लगे'' (आयत 1)। ''ज्योतिषी'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''magi'' यूनानी शास्त्र का लिप्यन्तरण है जो ''मैजीशियन'' अर्थात जादूगर से निकला है।[25] ज्योतिषी (पण्डित) या मेयजी ज्ञान की खोज में थे, यद्यपि उनका ज्ञान, विज्ञान और अन्धविश्वास का मिश्रण था।[26] वे राजा नहीं थे,[27] परन्तु कई बार वे राजाओं के सलाहकारों के रूप में काम करते थे।[28] किसी प्रकार, परमेश्वर ने उन्हें विश्वास दिला दिया था कि वे एक निश्चित तारे के पीछे चलें, तो मसीहा को पा लेंगे।

वह तारा पहले तो उन्हें यरूशलेम में ले गया। उन्हें उम्मीद होगी कि राजा के जन्म की बात पूरे नगर में फैली होगी। परन्तु नगर में जाकर उन्हें ऐसा कुछ नहीं मिला।

वे पूछने लगे, ''कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है,[29] कहां है?'' (आयत 2क)। उनकी ये बातें राजा हेरोदेस तक पहुंच गईं। राजा ने यहूदी धार्मिक अगुओं से पूछा कि मसीहा का जन्म कहां हुआ होगा। बिना हिचकिचाए, उन्होंने कहा, ''बैतलहम में'' (आयतें 5, 6)। हेरोदेस ने यह बात ज्योतिषियों को बताई और उन से यह प्रतिज्ञा ली कि जब वे बालक का दर्शन कर लें, तो आकर उसे भी बताएं। उसने झूठ बोला कि ''मैं भी आकर उसको प्रणाम करूं [गा]'' (आयत 8)।

यरूशलेम से दक्षिण की ओर जाते हुए ज्योतिषियों को फिर से वह तारा दिखाई दिया और उनके आगे-आगे चलकर, ''जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया'' (आयत 9ख)। वे आनन्दित हुए, और फिर, ''उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई'' (आयत 10, 11)। सोने के बारे में तो आप जानते ही हैं। लोबान एक विशेष पेड़ से लिया गया कीमती सफेद धूप या गूंद थी। इसे धनी लोग अपने घरों को सुगन्धित करने के लिए जलाते थे। मुर्र भी लगभग लोबान की तरह ही तैयार किया जाता था। इसकी सुगन्ध भी बहुत मोहक होती थी, परन्तु इसका इस्तेमाल मुज़्यतया शव पर लगाने के लिए किया जाता था।

अपना मिशन पूरा करके, ज्योतिषी घर को लौटने लगे। ''और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए'' (आयत 12)।

मिस्र में जाना (मत्ती 2:13-15)

हेरोदेस की प्रतिक्रिया का पहले से अनुमान लगाकर, प्रभु ने यूसुफ को अपने परिवार

को मिस्र में ले जाने के लिए बताने को एक स्वर्गदूत भेजा।[30] एक बार फिर यूसुफ हिचकिचाया नहीं। वह परिवार सहित एक सौ मील दूर मिस्र की सीमा तक चला गया होगा। सीनै पर्वत के ऊबड़-खाबड़ रास्ते से होते हुए वे एक सौ मील और दूर नील तक पहुंच गए होंगे। उन्हें वहां अपने देश के लोग मिले होंगे, ज़्योंकि कई यहूदी सिकन्द्रिया में[31] और मिस्र में हर जगह बस गए थे।

हम नहीं जानते कि यूसुफ, मरियम और यीशु मिस्र में कितना समय रुके। यह समय कई महीनों का भी हो सकता हैं। वहां रहते समय उनका गुज़ारा कैसे चलता था। शायद यूसुफ को बढ़ई के रूप में कुछ काम मिल गया था-परन्तु, सोने, लोबान और मुर्र के उपहारों को न भूलें। इस बार परमेश्वर ने अपने उद्देश्य के लिए विदेशी दूतों का इस्तेमाल किया।

निर्दोषों की हत्या (मत्ती 2:16-18)

यह जानकर कि ज्योतिषी उसे बताने के लिए वापस नहीं आए हैं, हेरोदेस आग बबूला हो गया। अपने सिंहासन के सभी सत्भावित प्रतिद्वंद्वियों को मिटाने के प्रयास में उसने ''बैतलहम और उसके आस-पास के सब लड़कों को, जो दो वर्ष के व उससे छोटे थे, मरवा डाला'' (आयत 16)।[32] कहते हैं कि ''उसने घौंसले में अपनी तलवार घुसेड़ी, परन्तु पक्षी उड़ चुका था।''[33]

बैतलहम कोई बहुत बड़ा नगर नहीं था, इसलिए मारे जाने वाले लड़कों की संख्या काफी कम होगी (बारह से पचास के अनुमान लगाए जाते हैं)। फिर भी, हेरोदेस के क्रूर कार्य से सैकड़ों दिल तो दुखी हुए। मत्ती ने इस त्रासदी की तुलना यरूशलेम के गिरने पर विलाप से की (आयतें 17, 18[34])।

कुछ लोग पूछते हैं, ''परमेश्वर ने उन बच्चों की रक्षा ज़्यों नहीं की, जैसे उसने यीशु की की?'' याद रखें कि परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतन्त्र नैतिक जीव बनाया है। इसलिए उसने हेरोदेस को हेरोदेस ही रहने की अनुमति दी। परन्तु हम यकीन से कह सकते हैं कि परमेश्वर मनुष्य के कार्यों को नियन्त्रित तभी करेगा, जब वे कार्य उसके उद्देश्य के विरुद्ध होंगे। बैतलहम में बच्चों की मृत्यु से संसार के उद्धार के लिए उसकी योजना में कोई फर्क नहीं पड़ना था;[35] जबकि यीशु की मृत्यु से पड़ना था।[36] उन निर्दोषों की मृत्यु पर शोक करने के साथ-साथ आइए इज़्मानुएल के छूटने का जश्न भी मनाएं!

नासरत को लौटना (मत्ती 2:19-23; लूका 2:39ख)

हेरोदेस की मृत्यु के बाद, एक स्वर्गदूत यूसुफ के पास यह कहने के लिए आया कि ''उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; ज़्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए'' (मत्ती 2:20)। स्पष्टतया, यूसुफ बैतलहम में जाने के लिए तैयार था, जब तक उसे यह पता न चला कि हेरोदेस का पुत्र अरखिलाउस ही यहूदिया का हाकिम है (मत्ती 2:22)। ज़्योंकि अरखिलाउस अपने पिता की तरह ही क्रूर होने के लिए कुज़्यात था।[37]

इसलिए वे यहूदिया में जाने के बजाय (आयत 22) उज़र में अपने गृहनगर गलील के नासरत में चले गए। बैतलहम में जाने के लिए वे एक साल से अधिक समय पहले निकले; अब वे वापस आ गए (मत्ती 2:23; लूका 2:39ख)। नासरत में उनका लौटना परमेश्वर की योजना का ही भाग था (मत्ती 2:23[38])।

एक बालक तैयार हुआ (लूका 2:40-52)

यीशु की कहानी में यहां पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सुसमाचार के वृत्तांत के लेखकों का उद्देश्य मसीह की जीवनी लिखना नहीं था। केवल लूका ने ही अगले अठाइस या अधिक वर्षों की बातें लिखी हैं और उसने भी एक ही घटना के विवरण दिए हैं।[39]

यीशु के प्रारम्भिक बारह वर्ष (आयत 40)

यीशु जहां सम्पूर्ण परमेश्वर था, वहीं वह सम्पूर्ण मनुष्य भी था। इस कारण वह दूसरे सब लड़कों की तरह ही बड़ा हुआ, या, कम से कम कहें कि जैसे सब लड़के बड़े होते हैं: ''और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था'' (आयत 40; तु. लूका 1:80 और 1 शमूएल 2:26)।

स्पष्टतया, यीशु के लिए यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वह, वह सब कुछ बचपन से बड़े होने तक सहे, जिसका सामना हमें करना पड़ता है (इब्रानियों 4:15)। यीशु ने परमेश्वर होने से ही ''अपने आपको शून्य'' (फिलिप्पियों 2:6, 7) नहीं किया। उसने स्पष्टतया अपने आप को सर्वज्ञ होने के रूप में भी शून्य किया (देखें मत्ती 13:32)।

मैं यीशु के पहले शब्दों, उसके पहले कदमों, नासरत में छोटे से घर के उसके प्रारम्भिक दिनों, उस घर में दूसरे बच्चों के जन्म होने पर उसकी प्रतिक्रिया के बारे में जानना चाहूंगा। परन्तु परमेश्वर को यही अच्छा लगा कि हम इतना ही जानें कि यीशु वैसे ही बड़ा हुआ, जैसे मैं और आप बड़े हुए थे।

जब यीशु बारह वर्ष का हुआ (आयतें 41-50)

लूका ने यीशु के आरम्भ के वर्षों का पर्दा एक ही बार उठाया, जब वह बारह वर्ष का था। बारह वर्ष की आयु एक यहूदी लड़के के जीवन का महत्वपूर्ण मील पत्थर होता था। इस उम्र में वह कारोबार करना सीखने लगता और उसे ''व्यवस्था का पुत्र'' कहा जाता था; वह आराधनालय में लोगों के साथ बैठना आरम्भ कर देता था। जब यीशु बारह वर्ष का हुआ, तो यूसुफ और मरियम उसे तीन बड़े पर्वों में से सबसे पवित्र पर्व, फसह पर लेकर आए।

जब यूसुफ और मरियम घर लौट रहे थे, तो यीशु खो गया। वे घबराए हुए, यरूशलेम में जाकर उसे ढूंढ़ने लगे।

> और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठ, उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब

उसकी समझ और उसके उज़रों से चकित थे (आयतें 46, 47)।

इस दृश्य की गलत व्याज़्या न करें। यीशु ने उपदेशकों की ज़्लास नहीं लगाई थी, अर्थात वह उन्हें शिक्षा नहीं दे रहा था। यह उस समय की एक विशेष धार्मिक ज़्लास थी, जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों आपस में सवाल-जवाब करते थे। (आज के समय में हम उसे चर्चा के लिए ज़्लास कहेंगे।) हैरानी इस बात की थी कि एक बारह वर्ष के लड़के की आत्मिक वास्तविकताओं में इतनी रुचि है और आत्मिक सिद्धान्तों में इतनी जबर्दस्त समझ।

यीशु को पाकर मरियम का फूट पड़ना विशेष तौर पर मां की भावुक प्रतिक्रिया थी, जो राहत पाने के साथ-साथ चिढ़ भी गई थी। ''... और उस की माता ने उस से कहा; हे पुत्र, तू ने हम से ज़्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे'' (आयत 48)। यीशु भी परेशान हुआ लगता है: ''तुम मुझे ज़्यों ज़्यों ढूंढ़ते थे? ज़्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है'' (आयत 49)।

ये यीशु के पहले लिखित शज़्द हैं। मूल शास्त्र के मूल शज़्दों का अर्थ है, ''मुझे अपने पिता के काम करना आवश्यक है,''[40] परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि कौन से ''काम।'' ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में ''अपने पिता के मामले'' है।[41] अनुवाद जो भी हो, बारह वर्ष की आयु में भी यीशु को पहले ही अपने ईश्वरीय उद्देश्य की स्पष्ट समझ थी।

ज़्या यह अन्तरदृष्टि यीशु में अचानक, बिजली के चमकने की तरह आई; या धीरे-धीरे, नया दिन चढ़ने की तरह? यीशु को बारह वर्ष की आयु में अपने उद्देश्य की पूरी समझ थी या केवल कुछ-कुछ? हम इन प्रश्नों का उज़र निश्चितता से नहीं दे सकते, परन्तु यह अवश्य कह सकते हैं कि बारह वर्ष का यीशु वह पुरुष बनने की राह पर था, जो उसने बनना था।

अगले अठारह वर्ष (आयतें 51, 52)

अपनी ईश्वरीय स्थिति की यीशु की समझ के प्रकाश में अगली आयत चौंका देने वाली है: ''तब वह उन के साथ गया,[42] और नासरत में आया, और उनके वश में रहा; ...'' (आयत 51)। यदि किसी बच्चे को अपने माता-पिता की आज्ञा न मानने के कारण धर्मी ठहराया जा सकता हो तो वह केवल यीशु ही होगा, परन्तु वह जानता था कि माता-पिता की आज्ञा मानना अपनी इच्छा पर निर्भर नहीं है (निर्गमन 20:12; देखें इफिसियों 6:1-3)।

यीशु के जीवन के अगले अठारह या इससे अधिक वर्षों को धुंधला सा दिखाते हुए, पर्दा गिरा दिया जाता है। पवित्र शास्त्र हमें उन वर्षों के कुछ संकेत देता है। यीशु का पालन-पोषण एक बड़े परिवार में हुआ, जिसमें कम से कम दो बहनें और चार भाई थे (मज़ी 13:55, 56; मरकुस 6:3)।[43] यूसुफ से उसने बढ़ई का काम सीखा (मज़ी 13:55; 6:3)। यीशु का ''अज़्बा'' शज़्द के इस्तेमाल से (मरकुस 14:36) जो ''पिता'' के लिए एक स्नेहपूर्ण शज़्द है, संकेत मिल सकता है कि यूसुफ के साथ उसका अच्छा सज़्बन्ध था। यूसुफ की मृत्यु होने पर,[44] सबसे बड़ा होने के नाते, यीशु ने परिवार की प्राथमिक सहायता

का जिज़्मा उठाया होगा। यीशु ने पवित्र शास्त्र की शिक्षा पाई थी,[45] शायद किसी आराधनालय की पाठशाला में और निश्चय ही आराधनालय की प्रार्थना सभाओं में, ज़्योंकि[46] वह आराधनालय में निरन्तर जाता था (लूका 4:16)। हम यीशु के जवानी के समय के कुछ अवलोकनों और अनुमानों की सूची जोड़ सकते हैं,[47] परन्तु पवित्र शास्त्र हमें उन वर्षों के बारे में उतना ही बताता है, जितना लूका 2:52 में मिलता है: ''और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।''

यीशु का चहुंमुखी विकास हुआ (जैसे हमारा होना चाहिए) अर्थात वह मानसिक (''बुद्धि में''), शारीरिक (''मनुष्यों के अनुग्रह में'') और आत्मिक (''परमेश्वर के अनुग्रह में'') तौर पर बढ़ता गया। उसका बढ़ना आसान नहीं था (हमारी तरह): अनुवादित शज़्द ''बढ़ता गया'' मिश्रित यूनानी शज़्द है। जो ''की ओर'' ''काटना'' के लिए शज़्द के साथ मिलता है। इसका मूल अर्थ है ''एक मार्ग की ओर काटना।''[48] जो उदाहरण इस समय दिमाग में आता है, वह है, आगे बढ़ने के लिए भारी कूंची से रास्ता साफ़ करना। यीशु ने उस मार्ग को कितनी सफलता से काटा, हमारे अगले पाठ में उसकी सेवकाई की शिक्षा आरज़्भ करने का पता चलेगा।

सारांश

यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि एक बालक उत्पन्न होगा (यशायाह 9:6)। इस पाठ में, हमने देखा है कि उस बालक के जन्म होने और फिर उसकी रक्षा करने और परमेश्वर द्वारा तैयार करने से, वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। हमने यह ज़ोर देने का प्रयास किया है कि कहानी के हर मोड़ पर परमेश्वर का पूरा नियन्त्रण था।

हमने तेज़ी से यीशु के पहले तीस वर्षों की समीक्षा की है। कुछ लोग हैरान हैं कि परमेश्वर ने यीशु को तैयार करने के लिए तीस वर्ष ज़्यों लगाए, अर्थात यीशु ने अपनी सेवकाई पहले आरज़्भ ज़्यों नहीं की। बी.एस. डीन. का कहना है, ''संसार की सबसे अधिक आवश्यकता स्वभाव है; और नासरत की अस्पष्टता से आने के कारण ऐसा पौरुष तैयार करने में जितने भी वर्ष लग जाएं व्यर्थ नहीं हैं।''[49] यीशु को तैयारी के उन खामोश वर्षों में भी ''अपने पिता के काम का उतना ही ध्यान'' था, जितना अपनी सार्वजनिक सेवकाई के चरम के समय। किसी भी बड़े काम के लिए तैयारी आवश्यक होती है। इसे न तुच्छ जानें; और न ही इसकी उपेक्षा करें।

टिप्पणियां

[1]हम नहीं जानते कि मरियम ने स्वर्गदूत के दर्शन की बात उसे बताई या नहीं; परन्तु यदि उसने बताई थी, तो शायद उसके लिए विश्वास करना कठिन था। [2]NASB की मेरी प्रति में ''उसे त्याग देने'' पर मार्जिन नोट में ''उसे तलाक देने'' है। [3]साधारणतया, तलाकनामा दो या अधिक गवाहों की उपस्थिति में दिया जाता था। यदि पुरुष चाहे, तो यह समारोह बहुत सार्वजनिक और पत्नी के लिए बहुत अपमानजनक हो सकता था।

यूसुफ यह सब नहीं चाहता था: ''... उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, [उसने] उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की'' (मत्ती 1:19)।[4]अन्य विचारों में, एक बार तलाक देने के बाद, मरियम उससे सदा के लिए छूट सकती थी (व्यवस्थाविवरण 24:2-4)।[5]अगले शब्दों की व्याख्या का स्वाभाविक और सहज ढंग यह है कि मरियम के ''पुत्र को जन्म देने'' *के बाद,* यूसुफ और मरियम के सामान्य विवाहित दम्पत्ति की तरह शारीरिक सम्बन्ध थे।[6]इस तथ्य पर कि यीशु के जन्म के समय मरियम कुंवारी थी, यह एक और पद है। ''मसीह आ रहा है'' पाठ में कुंवारी से जन्म पर नोट्स देखें।[7]''पुराने नियम के वचन कैसे पूरे हुए'' पाठ देखें।[8]देहधारी होने की यह एक और पुष्टि है। ''मसीह आ रहा है'' पाठ में देह धारण करने पर नोट्स देखें।[9]जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ॉर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 26. [10]पुस्तक में पहले आया एक पाठ ''मसीह का जन्म कब हुआ था?'' देखें।

[11]पुराने नियम में बैतलहम का उल्लेख कई बार आया है (उत्पत्ति 48:7; रूत 1:22), परन्तु इसे मुख्य रूप से दाऊद के घर के लिए जाना जाता था (1 शमूएल 16:1; 17:12; 20:6)। [12]वचन से यह संकेत मिलता है कि यदि रोमी सरकार का दबाव न होता तो यूसुफ बैतलहम में न जाता, इसके अलावा यह भी संकेत मिलता है कि परमेश्वर ने यूसुफ और मरियम को यह नहीं बताया कि बालक का जन्म बैतलहम में होना आवश्यक है। इसलिए मरियम को जाने के लिए कोई और प्रेरणा मिली थी। [13]मत्ती की पुस्तक में बताया गया है कि यूसुफ मरियम को पहले ही ''अपनी पत्नी'' बना चुका था (मत्ती 1:24)-अन्य शब्दों में उनका समारोहपूर्वक विवाह हो चुका था। परन्तु पति-पत्नी के रूप में शारीरिक सम्बन्ध बनाने से पहले वास्तविक ''आधिकारिक'' विवाह नहीं माना जाता था। इसलिए लूका के वृत्तांत से एक अर्थ में यह संकेत मिलता है कि यूसुफ और मरियम की मंगनी (सगाई) ही हुई थी (लूका 2:5)। [14]बैतलहम में आने वालों को वह भूमिगत गुफ़ा दिखाई जाती है, जिसमें माना जाता है कि यीशु का जन्म हुआ था। हमें केवल इतना ही बताया गया है कि बालक यीशु को चरनी में रखा गया था। जानवरों का यह बाड़ा नगर में कहीं भी, या बाहर भी हो सकता है। [15]मैं यह सुझाव नहीं दे रहा कि यीशु का जन्म उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से अधिक यादगारी था। ''यादगारी घटना'' से मेरा तात्पर्य परमेश्वर का देहधारी होना है *ताकि* वह हमारे पापों का दाम चुका सके। [16]''पहिलौठा'' शब्द का इस्तेमाल कई ढंगों से हो सकता है (इब्रानियों 1:6); परन्तु लूका 2 अध्याय के संदर्भ में, आयत 7 में ''पहिलौठा'' शब्द का सामान्य अर्थ यह संकेत देता है कि मरियम के और भी बच्चे थे। [17]इसके आगे की स्वर्गदूतों की बातें जगत प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं (आयत 14)। ध्यान दें कि ''शांति'' शब्द सब लोगों के लिए नहीं है (जैसा कि KJV और हिन्दी के अनुवाद से लगता है), बल्कि उन लोगों के लिए है ''जिनसे [परमेश्वर] प्रसन्न है'' (NASB)। [18]आयत 19 पर ध्यान दें: ''परन्तु मरियम यह सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।'' 2:51 के अन्तिम भाग के साथ, इस आयत के कारण कई लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मरियम ने अपने विचार अवश्य लूका को बताए होंगे। [19]नया नियम सिखाता है कि क्रूस पर यीशु की *मृत्यु* से पुराने नियम का काल समाप्त हो गया (कुलुस्सियों 2:14) और नये नियम का काल आरम्भ (इब्रानियों 9:16, 17)। [20]यूसुफ और मरियम ने वह बलिदान भेंट किया, जो निर्धनों के लिए ठहराया हुआ था। ''परमेश्वर ने मरियम को ही क्यों चुना'' पाठ में टिप्पणी 2 पर विचार करें।

[21]भविष्यवक्ता प्रभु के लिए बोलने वाला परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ व्यक्ति होता था। भविष्यवक्तिन नबिया को कहा गया है। परमेश्वर की प्रेरणा दिए जाने के समय में भी, भविष्यवक्तिनें आम नहीं होती थीं। पुराने नियम में, दबोरा एक नबिया थी (न्यायियों 4:4)। [22]लूका 2:39 के अन्त में कहा गया है, ''वे गलील में अपने नगर नासरत को फिर चले गए।'' यह नासरत में अपना सामान लाने और यूसुफ के औज़ार लाने के लिए जाना हो सकता है, जिसके बाद वे बैतलहम में लौट आए। ऐसा सफर किया गया हो सकता है, परन्तु 2:39 में लूका के शब्दों से लगता है कि वे नासरत में उस नगर को अपना घर बनाने के लिए लौटे थे। यह अधिक सम्भव है कि लूका ने ज्योतिषियों के आने और मिस्र में जाने की बात निकालते हुए यहां पर अपनी कहानी को केवल संक्षिप्त किया। लूका ने जब बाद में शाऊल के मन परिवर्तन की शृंखला दी (प्रेरितों 9:19-26), तो उसने इस तथ्य को छोड़ दिया कि शाऊल ने अरब में कुछ समय बिताया था (गलातियों 1:17)।

पवित्र शास्त्र के लेखकों का उद्देश्य छोटी-छोटी बातों का वर्णन करना नहीं था। [23]ज्योतिषियों के आने पर अतिरिक्त जानकारी के लिए, इस पुस्तक के पहले एक पाठ ''उद्धारकर्ज़ा को ढूंढ़ना'' में देखें। [24]ज्योतिषी के लिए अंग्रेज़ी शज्द ''Magi'' को ''मे-जी'' पढ़ा जाता है। [25]ये ज्योतिषी या पण्डित लोग सच्चाई के निष्कपट खोजी थे। दुख की बात है कि बाद में कुछ ज्योतिषी झाड़-फूंक करने और सच्चाई का विरोध करने वाले बन गए थे। (यही मूल यूनानी शज्द प्रेरितों 8:9 और 13:6, 8 में मिलता है।) [26]मेरे पास जो NASB की प्रति है, उसके माजिन नोट में ''ज्योतिषविज्ञान, औषधि और प्राकृतिक विज्ञान में विशेषता प्राप्त बुद्धिमान लोगों का वर्ग'' है। [27]ज्योतिषियों के बारे में एक प्रसिद्ध गीत का मुखड़ा है, ''हम तीन राजा मशरिक (अर्थात पूर्व) के हैं। ...'' परन्तु ''राजा'' शज्द गलत है। मसीहा की कुछ भविष्यवाणियों में कहा गया था कि राजा उसके सामने झुकेंगे (भजन संहिता 72:10, 11; यशायाह 49:7; 60:3)। शायद यहीं से यह विचार पैदा हुआ कि वे ज्योतिषी राजा ही थे। [28]एस्तेर 1:13 और दानिय्येल 2:12 के ''पण्डित'' मज़ी 2 अध्याय वाले ज्योतिषियों की श्रेणी में ही होंगे। [29]यीशु बाद में राजा नहीं बना बल्कि राजा ही *पैदा हुआ* था। इस वाज़्यांश से हेरोदेस भयभीत हो गया होगा ज़्योंकि वह जन्म से राजा नहीं था, बल्कि उसे रोमियों ने राजा बनाया था। इसके अलावा दाऊद की वंशावली में से न होने के कारण, पवित्र शास्त्र के अनुसार उसे पलिश्तीन में सिंहासन पर बैठने का कोई अधिकार नहीं था। उसे लगा होगा कि ''यहूदियों का राजा *जिसका जन्म हुआ है*'' जो भी हो उसके शासन के लिए बहुत बड़ा खतरा होगा है। [30]मज़ी ने ज़ोर दिया कि यह जाना पुराने नियम के शास्त्र को पूरा करना था (2:15)। पुराने नियम के वचन के पूरा होने के बारे में जानने के लिए, इस पुस्तक में पहले आए एक पाठ ''पुराने नियम के वचन कैसे पूरे हुए थे'' देखें।

[31]सिकन्द्रिया और यहूदियों के बारे में, इस पुस्तक में पहले आया एक पाठ ''संसार जिसमें मसीह आया'' देखें। यह अनुमान लगाया गया है कि सिकन्द्रिया में यहूदियों की आबादी बीस से चालीस प्रतिशत थी। [32]अमेरिका में, हम किसी बच्चे को चौबीस महीने का हो जाने के बाद ''दो वर्ष का'' मानते हैं। यहूदी लोग बारह महीने का हो जाने के बाद बच्चे को ''दो वर्ष का'' मानते थे। संसार के कई देशों में आज भी ऐसे ही हिसाब लगाया जाता है। (एक नवजन्मा बच्चा जीवन के अपने पहले वर्ष में होता है; अपने जन्म की पहली वर्षगांठ पर, वह अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश करता है; इसी प्रकार अगले वर्षों में भी होता है।) आयत 16 से संकेत मिलता है कि तारा पहले बारह महीने या इससे पहले दिखाई दिया था। कुछ लोगों का विश्वास है कि वह तारा लगभग छह महीने पहले दिखाई दिया था और इसी से हेरोदेस ने ''सुरक्षित ढंग के लिए'' दोगुना करके जोड़ा था। ज्योतिषियों के पलिश्तीन में पहुंचने के समय यीशु छह से बारह महीने का होगा। [33]लेखक अज्ञात। [34]बच्चों की हत्या की भविष्यवाणी पूरी होने के बारे में, अगले एक पाठ ''पुराने नियम के वचन कैसे पूरे हुए'' में देखें। [35]यद्यपि उन बच्चों की मृत्यु से उनके परिवार तबाह हो गए होंगे, परन्तु बच्चे स्वर्ग में ही गए होंगे (मज़ी 19:14)। [36]परमेश्वर के उद्देश्य को मात देने का शैतान का यह एक और प्रयास था। [37]पिछले एक पाठ ''संसार जिसमें मसीह आया'' में देखें। [38]मज़ी 2:23 में दिए गए वचनों के पूरा होने के बारे में अगले एक पाठ ''पुराने नियम के वचन कैसे पूरे हुए'' देखें। कुछ लोग ''नासरी'' शज्द के साथ ''नाज़ीर'' शज्द को उलझा देते हैं। ''नासरी'' का अर्थ केवल यह है कि यीशु नासरत में पला-बढ़ा। ''नाज़ीर'' वह होता था, जिसने नाज़ीरी मन्नत मानी होती थी (गिनती 6:1-8)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जन्म से नाज़ीर था (लूका 1:15 की गिनती 6:3, 4 से तुलना करें), परन्तु यीशु नाज़ीर नहीं था (मज़ी 11:18, 19)। [39]कहते हैं कि ''प्रकृति शून्यता को खड़ा नहीं कर सकती।'' इसी प्रकार, मनुष्य अज्ञानता को सहन नहीं कर सकते। जिस कारण, बाइबल से बाहर लोगों ने यीशु के प्रारज्भिक जीवन की कई सजावटी कहानियां बना लीं-जिनमें से कुछ मनघढ़ंत और कुछ परमेश्वर की निन्दा करने वाली हैं। ये परमेश्वर की प्रेरणा रहित ''अप्रामाणिक'' (apocryphal) विवरण परमेश्वर की प्रेरणा से दिए सुसमाचार के वृज़ातों के बिल्कुल विपरीत हैं। [40]NASB वाली मेरी प्रति के मार्जिन नोट में ''या, *काम;* मूलत: *मेरे पिता के काम*'' है।

[41]ह्यूगो मेकोर्ड, *मेकोर्ड'स न्यू टैस्टामेंट ट्रांसलेशन ऑफ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* (हैंडर्सन, टैनिसी: फ्रीडहार्डमैन यूनिवर्सिटी, 1988)। [42]जब लोग यरूशलेम में जाते हैं, तो हमेशा कहा जाता है कि लोग ''यरूशलेम में ऊपर'' गए। जब वे वापस आते हैं, तो कहा जाता है कि वे ''उतर'' गए। यह इसलिए है

ज़्योंकि यरूशलेम देश में सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित था। सदियों पहले दाऊद द्वारा इसे अपनी राजधानी बनाने का यह एक कारण हो सकता है। [43]उसके छोटे भाइयों ने उसका विरोध किया होगा; कम से कम उसकी सेवकाई के आरज़्भ में, ज़्योंकि उन्हें उसके परमेश्वर की ओर से होने पर विश्वास नहीं था (यूहन्ना 7:5)। [44]पुस्तक में पहले आए एक पाठ ''परमेश्वर ने मरियम को ही ज़्यों चुना'' में नोट्स पर विचार करें। [45]यीशु अधिकतर पुराने नियम की पुस्तकों से ही उद्धृत करता था। यीशु के बढ़ने पर ज़ोर देने से यह सुझाव मिलता है कि उसने पवित्र शास्त्र वैसे ही सीखा था, जैसे आप और मैं सीखते हैं: पढ़कर, याद करके और मनन करके। [46]बाद में यीशु की शिक्षा की कमी पर दिया गया कथन (यूहन्ना 7:15) केवल इस तथ्य के लिए है कि उसने रज़्बियों की पाठशाला में विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी। आज हम इसे कहेंगे, ''हमने कॉलेज से डिग्री नहीं पाई है।'' [47]उदाहरण के लिए, यीशु के दृष्टांतों से यह स्पष्ट है कि वह लोगों और प्रकृति को ध्यान से देखता था। पुन:, उसने उन आरज़्भिक वर्षों के दौरान प्रार्थना करने के लिए सुबह जल्दी उठने की आदत बना ली होगी (मरकुस 1:35)। सबसे महत्वपूर्ण, वह परमेश्वर की हर आज्ञा मानता था (देखें यूहन्ना 4:34); केवल वही एकमात्र ऐसा है, जिसने पुरानी व्यवस्था की एक-एक बिन्दी को पूरा किया। [48]डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एज़्सपैंडड वाइन'स एज़्सपोज़िटरी डिज़्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* सं. जोन आर. कोहलेन्बर्गर III विद जेज़्स ए. स्वैंसन (मिनियापुलिस: बैतनी हाउस पज़्लिशिर्ज़, 1984), 25. [49]बी. एस. डीन., ''बाइबल इतिहास की रूपरेखा'' में ''तैयारी का काल,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे।*